

# क्या हमारे शरीर के कुछ अंग बेकार भी हैं?

नरेंद्र देवांगन

**आ**ज का मनुष्य एक आदमकद आइने के सामने खड़ा होकर स्वयं को बड़े गौर से निहारता है और पूर्ण संतोष की मुद्रा में कहता है, 'यह है प्रकृति की सर्वोत्तम रचना'। किंतु एक तिलचट्टा अगर मनुष्य की यह गर्वोक्ति सुन ले तो निश्चय ही हंस पड़ेगा। अन्य सभी जीवधारियों की तुलना में वह इस धरती पर बहुत पहले से रहता आया है। मनुष्य की उत्पत्ति मात्र 10 लाख वर्ष पूर्व हुई थी जबकि तिलचट्टे की उत्पत्ति 10 करोड़ वर्ष पहले हुई थी। प्रकृति के साथ संघर्ष करते हुए किस प्रकार प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जीवित रहा जा सकता है इसका सबसे अधिक अनुभव उसी ने प्राप्त किया है।

विशाल ग्रहों तथा बड़े-बड़े नुकीले दांतों वाले गर्वीले शेरों को उसने विनाश की ओर अग्रसर होते देखा है। दीर्घकाय मैमथ और डायनासौर भी उसके सामने ही रुखसत हुए हैं।

अधिकांश जीवधारियों को जीवन निर्वाह के लिए जिन विटामिन की आवश्यकता रहती है, तिलचट्टा उन के बिना ही काम चला लेता है। बताइए, क्या यह जायज़ है कि ऐसे जीव के समक्ष मनुष्य अपनी शरीर रचना पर गर्व करे?

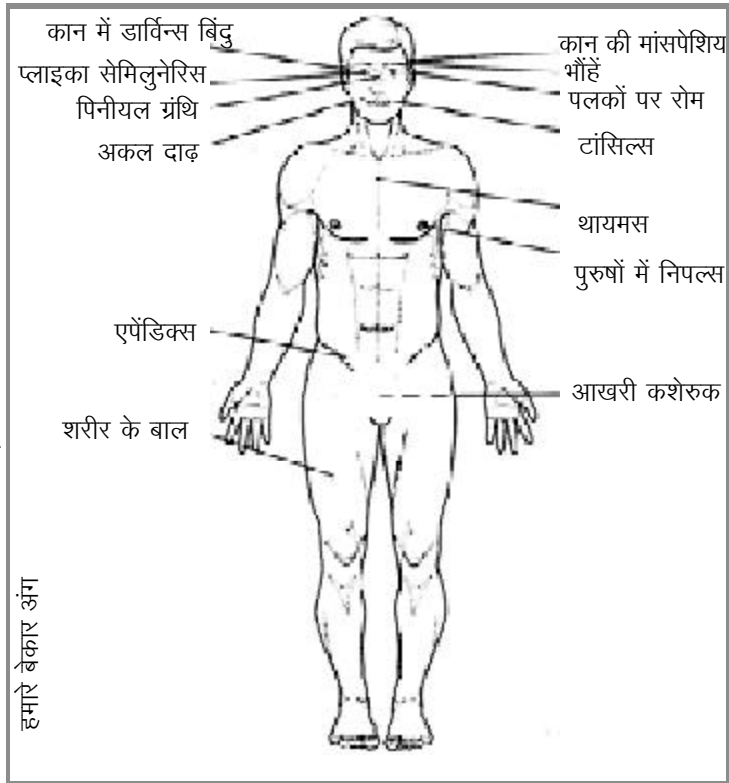
बाहर से सुंदर और नवीन प्रतीत होने वाला मानव शरीर वस्तुतः अनेक पैबंदों से भरा है। मांसपेशियों एवं स्नायुओं से जुड़े हमारे शरीर का ढांचा अपने भीतर बहुत-सी त्रुटियां छिपाए है और इन त्रुटियों के अलावा शरीर के कुछ हिस्से अत्यंत कमज़ोर भी हैं। कई अंगों का निर्माण तो व्यर्थ ही हुआ प्रतीत होता है। सुप्रसिद्ध शरीर रचना शास्त्रियों ने गहन अध्ययन के पश्चात इस सम्बंध में

जो तथ्य हमारे सामने रखे हैं, वे अत्यंत रोचक हैं।

आदिकाल से ही मनुष्य का मस्तिष्क विकास की ओर अग्रसर रहा है परंतु शारीरिक दृष्टि से वह अभी तक बहुत पीछे है। यहां तक कि ठीक ढंग से वह खड़ा भी नहीं हो पाता। उसकी पीठ हमेशा झुकी-सी रहती है।

हमारे पैरों का निर्माण शरीर का आधा भार सहने के लिए हुआ था, किंतु उनके ऊपर सारे शरीर का भार आ जाता है। इससे उदर नलियां गुर्दे को सहारा देने वाली झिल्ली को फाड़ डालती हैं और गुर्दे के पिछले हिस्से पर पूरा दबाव पड़ जाता है जिसके फलस्वरूप हमें आंत उतारने की तकलीफ होती है।

खड़ा होना एक स्वाभाविक अवस्था है, परंतु मनुष्य के लिए बैठना भी ज़रूरी है और वह बहुत ही कम बैठ पाता



हमारे बेकार अंग

है। पिछले 5 लाख वर्षों में भी वह आज तक अपने बैठने की संतोषजनक स्थिति नहीं खोज पाया है। अगर आपको इसकी सच्चाई में शंका हो तो किसी टॉकीज़ में अपने आगे बैठे व्यक्ति को ध्यानपूर्वक देखिए। ज़्यादा आरामदेह ढंग से बैठने की खोज में वह इधर-उधर खिसकता रहेगा और उसे इस खोज में कभी सफलता नहीं मिलेगी। इस बात के कई प्रमाण मौजूद हैं कि शरीर रचना की किसी त्रुटि के कारण हम ठीक ढंग से बैठ नहीं पाते। हमारी पीठ ज़्यादा दबाव पड़ने से झुक जाती है।

अतः फर्नीचर निर्माता तथा वायुयान, ट्रेन व मोटर की सीट बनाने वाली बड़ी-बड़ी कंपनियां अब अस्थि विशेषज्ञ सर्जनों को नियुक्त कर रही हैं। ये सर्जन ऐसी कुर्सियों की डिज़ाइन बनाएंगे जिन पर मनुष्य पूरे आराम से बैठ सके।

मानव शरीर के निरर्थक अंगों में मुख्य है एपेंडिक्स। हमारे पेट की छोटी-बड़ी आंतें जहां एक-दूसरे से मिलती हैं, वहीं एक उंगली के बराबर यह पुच्छाकार रचना होती है। आदि मानव का खाना बहुत ही मोटा और साधारण होता था जिसे पचाने के लिए लंबी आंतों का होना आवश्यक था। लेकिन जैसे-जैसे हमारे खाने की चीज़ों में परिवर्तन होता गया, हम सुपाच्य भोज्य सामग्रियों का सेवन करने लगे, आंतों की लंबाई कम होती गई। अब इस सिकुड़न क्रिया का स्मरण दिलाने के लिए ही मानो हमारे शरीर में एपेंडिक्स बाकी रह गई है। इसमें कोई छोटी-सी चीज़ अटक जाए तो हमारे शरीर की मशीनरी में रुकावट उत्पन्न हो जाती है और हमें शल्यक्रिया का सहारा लेना पड़ता है।

दूसरा निरर्थक अंग है हमारे मस्तिष्क के ऊपरी हिस्से की पीनियल ग्रंथि (जिसे तीसरी आंख भी कहते हैं)। 17वीं शताब्दी के सुप्रसिद्ध फ्रांसीसी दार्शनिक रेने देकार्त की धारणा थी कि इस छोटे, तिकोने और लाल-भूरे रंग के तंतु में ही हमारी आत्मा निवास करती है। किंतु जब एक मनुष्य के मस्तिष्क से यह ग्रंथि किसी कारणवश निकाल दी गई, तो भी उस के शरीर में उसकी आत्मा पूर्ववत् निवास करती ही रही यानी वह सही तरह जीवित रहा।

नवीन शोधों से यह बात भलीभांति प्रमाणित हो चुकी है कि पीनियल ग्रंथि का हमारे शरीर में कोई उपयोग नहीं है।

यह बिल्कुल निरर्थक है।

थायमस ग्रंथि (हृदय के पास की एक ग्रंथि) हमारी छाती की हड्डी के ठीक पीछे होती है। यह ग्रंथि बड़ी तेज़ी से बढ़ती है। यहां तक कि छोटे-छोटे बच्चों के शरीर में यह पूर्ण विकसित हो जाती है। इसके इस प्रकार बढ़ने से बहुत असुविधा का सामना करना पड़ता है। बहुधा इसके कारण ही सांस नली में हवा का प्रवेश अवरुद्ध हो जाता है और मनुष्य का गला घुटने लगता है। युवावस्था के बाद थायमस ग्रंथि धीरे-धीरे सिकुड़ने लगती है और वृद्धावस्था आते-आते गायब हो जाती है।

आखिर हमारे शरीर में यह थायमस ग्रंथि क्यों है? इसकी क्या उपयोगिता है? यह कौन-सा कार्य करती है? इन प्रश्नों का चिकित्सा विज्ञान के पास कोई उत्तर नहीं है।

तिल्ली (स्प्लीन, प्लीहा) का भी हमारे शरीर में किसी न किसी प्रकार की असुविधा उत्पन्न करने के सिवा और कोई कार्य नहीं प्रतीत होता। साधारणतया तिल्ली का वज़न 25 ग्राम से भी कम होता है। किंतु बीमारी की हालत में यह सूजकर 9 कि.ग्रा. या उससे भी अधिक वज़न की हो जाती है। परिणामतः इस के दबाव से उदर नलियां अपने नियत स्थानों से इधर-उधर हट जाती हैं और शरीर की सारी कार्यप्रणाली अस्त-व्यस्त हो जाती है। शल्य चिकित्सक आज तक इस के अस्तित्व का कोई उपयुक्त कारण नहीं खोज पाए हैं।

इसी प्रकार टॉसिल का भी कोई उपयोग नज़र नहीं आता। इन टॉसिल्स का निर्माण रोग के कीटाणुओं को (जो कभी दुर्भाग्यवश हमारे फेफड़ों में प्रवेश पा जाएं) रोके रखने और फिर उन्हें नष्ट कर देने के लिए हुआ था। किंतु बहुधा वे अपने इस काम का आधा ही भाग पूरा करते हैं। कीटाणुओं को फेफड़ों तक पहुंचने से रोक तो अवश्य लेते हैं, लेकिन उन्हें नष्ट नहीं कर पाते। उल्टे वे उन कीटाणुओं के चंगुल में फंस जाते हैं और स्वयं रुग्ण हो कर हमारे प्राणों पर खतरा बन जाते हैं।

हमारी रीढ़ की सबसे नीचे की तिकोनी हड्डी भी बहुधा किसी न किसी प्रकार के संकट को ही जन्म दे बैठती है। और इस हड्डी की हमारे लिए कोई उपयोगिता हो ऐसी

बात भी नज़र नहीं आती।

मनुष्य के शरीर में कुछ ऐसे अंग भी हैं, जिनका निर्माण बेहतर ढंग से होना चाहिए था। पित्ताशय ऐसे ही कमज़ोर अंग का नमूना है। नाशपाती के आकार का पित्ताशय जिगर के ठीक बगल में कुछ नीचे की ओर होता है। यह जिगर द्वारा बनाए जाने वाले पित्त का संग्रह करता है। भोजन के बाद पित्ताशय अपने संग्रह को छोटी आंत में खाली कर देता है, जहां वह मूलतः पाचन में मदद करता है।

किंतु वैज्ञानिक विश्लेषण के अनुसार पित्त में पाए जाने वाले रासायनिक पदार्थ पथरी पैदा करते हैं। गुर्दों की पथरी इस पित्त से ही बनती है। यह पथरी काफी तकलीफदेह हो सकती है। कभी-कभी तो अंडों के आकार तक की पथरी रोगियों के पेट से निकाली गई है।

यह पित्ताशय एक और प्रकार से संकट देता रहता है। खानपान के दोषों से यह पित्त बिगड़ जाता है तो जिगर की कई बीमारियां हो जाती हैं। जैसे, खून की कमी और एनीमिया।

आधुनिक शरीर शास्त्रियों का मत है कि पित्ताशय यदि होता ही नहीं तो बेहतर था। बहुत से प्राणी - चूहे, घोड़े, हिरन - बिना पित्ताशय के भी बड़े आराम से जीवित रहते

हैं। एक बार शल्य चिकित्सकों ने एक मनुष्य के शरीर से पित्ताशय निकाल कर उसका परिणाम देखना चाहा था। वह मनुष्य बिना किसी कष्ट के जीवित रहा।

अपने जिस शरीर पर मनुष्य इतना अभिमान करता है, उसका एक और दोषपूर्ण अंग है उसके पैर। पैरों पर जितना भार पड़ता है, उतना भार सहने की क्षमता पैरों की मांसपेशियों में नहीं है। परिणामस्वरूप अक्सर पैरों में दर्द बने रहने की शिकायत हो जाती है। इसी प्रकार, पैर की सबसे छोटी उंगली भी अनावश्यक है। उसकी कोई खास उपयोगिता नज़र नहीं आती।

नृतत्व शास्त्रियों का कहना है कि मनुष्य के शरीर के भीतर धीरे-धीरे एक नए शरीर की रचना हो रही है जो वर्तमान परिस्थितियों के बिलकुल अनुकूल होगी। इस नए शरीर में एपेंडिक्स का नामो निशान तक न होगा। पैरों की छोटी उंगली तो अभी ही धीरे-धीरे लुप्त हो रही है। बहुत से व्यक्तियों के पैरों की इस उंगली में नाखून नहीं देखे जाते। इसके साथ ही नृतत्व शास्त्रियों का यह भी मानना है कि आगामी 20 हज़ार वर्षों के भीतर हमें ऐसे किसी परिवर्तन की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। (स्रोत फीचर्स)

## अगले अंक में

स्रोत दिसम्बर 2010

अंक 263

● पानी से पहले ज़मा में रहती थीं व्हेल

● खतरे में है भारतीय नीला वेन्डा

● क्या पानी का संकट हमें ले डूबेगा?

● लोकायत के पचास वर्ष

● दवा परीक्षण का एक शर्मनाक अध्याय

